Reg No 177/2008-2009 ISSN: 2322–0317

# PSSH PERSPECTIVE of SOCIAL SCIENCES and HUMANITIES

An International Multidisciplinary Refereed Research Journal

VOL 2, NO 2

JULY - DECEMBER 201

Biannual

Editor

*Dr Hemant Kumar Singh*

Assistant Professor

Economics Department

Madan Mohan Malviya PG College

Deoria (UP)

Publisher

*Herambh Welfare Society*

Varanasi (India)

# भारत में साम्प्रदायिक तनावः एक सुझावपरक विवरण

सुमिता कुमारी[9]

साम्प्रदायिकता को एक विचारधारा माना जाता सकता है जो कि यह बताती है कि समाज धार्मिक सम्प्रदायों में बटा हुआ है, जिनके स्वार्थ एक दूसरे से भिन्न है। एक समुदाय के सदस्य जो दूसरे समुदाय के सदस्यों और धर्म के विरूद्ध प्रतिरोध करते हैं उन्हें 'साम्प्रदायिकता ' कहा जा सकता है। साम्प्रदायिक व्यक्ति वे हैं जो राजनीति को धर्म के माध्यम सें चलाते हैं। नेताओं में वे धार्मिक नेता साम्प्रदायिक हैं जो अपने धार्मिक समुदायों को व्यापारिक उद्यम और संस्थाऐं मानते हैं। साम्प्रदायिकता का आचरण कयी प्रकार से किया जाता है जैसे राजनीतिक साम्प्रदायिकता, धार्मिक साम्प्रदायिकता, और आर्थिक साम्प्रदायिकता आदि। भारतीय समाज में धार्मिक समुदाय कई सम्प्रदायों में बटें हुए हैं। हिन्दू धर्म– वैष्णव व शैव साम्प्रदाय, मुस्लिम धर्म– शिया और शुन्नी, सिख धर्म– निरंकारी व अकानकी, ईसाई धर्म– प्रोटेस्टेंट व कैथोलिक,।हिन्दुओं और मुसलमानों के पारस्परिक सम्बन्ध काफी लम्बे समय से तनावपूर्ण रहे हैं,जब कि हिन्दुओं और सिखों को पिछले पन्द्रह वर्षो से संदेह की दृष्टि देखना शुरू किया ।मुसलमानों में शिया और सुन्नी एक दुसरे के प्रति विद्वेष का भाव रखते हैं।

बिल्फ्रेड स्मिथ के अनुसार ''साम्प्रदायिकता मस्तिष्क की वह प्रवृत्ति है जिसके अन्तर्गत एक पृथक समूह के समर्थक अपने आपको एक दुसरे समूह को अपने विरोधी हितों वाला समूह मानते है।''

साम्प्रदायिकता की प्रकृति पर प्रकाश डाला जाय तो यही प्रतीत होता है कि किसी धर्म के प्रति आस्था या धार्मिक व्यवस्था का अनुगमन साम्प्रदायिकता नही कहा जा सकता बल्कि धर्म का शोषण करना साम्प्रदायिकता है। एक धार्मिक समुदाय को दूसरे समुदाय के विरूद्ध तथा राष्ट्र की संयुक्तता के विरूद्ध उपयोग किया जाना साम्प्रदायिकता है। 'यह वस्तुतः धार्मिकता को राजनीतिक शत्रुता में बदलने की प्रक्रिया है जो प्रगति, प्रजातन्त्र, धर्म निर्पेक्ष, संस्कृति और तार्किता, वैज्ञानिकता का विरोधी है।
शर्मा ने कहा बताया कि साम्प्रदायिकता धर्म और राजनीति का एक अपवित्र समझौता है जिसकी अभिव्यक्ति दो रूपों में परिलक्षित हेाती है एक धार्मिक उद्देश्यों के लिए राजनीतिक शक्ति का उपयोग किया जाना तथा दूसरा राजनीतिक लाभ के लिए धर्म का किया जाना ।

[9] शोधछात्रा, समाजशास्त्र विभाग, बी०एच०यू वाराणसी

भारत में साम्प्रदायिक तनावो एवं दंगो में वे तनाव गम्भीर समस्याएं पैदा करते हैं जो हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच हुए। ये लोग एक दुसरे को शंका की दृष्टि से देखते हैं दोनो ने एक दुसरे से रक्त–रंजित होलियां खेलीं हैं। साम्प्रदायिकता के कारण ही 1947 में देश के टुकड़े हुए और स्वातन्त्रता प्राप्ति के बाद भी अनेक स्थानो पर उपद्रव एवं दंगे हुये ।अलीगढ़, रांची, मेरठ, औरंगाबाद, मुरादाबाद, बिहार शरीफ, जलगांव एवं जमशेदपुर के दंगो की नक्त'–रंजित यादें अभी ताजा ही हैं। पंण्डित नेहरू साम्प्रदायिकता को भारत का शत्रु मानते थे अपने एक भाषण में उन्होने कहा'' साम्प्रदायिकता के मुद्दे पर कोई समझौता नही हो सकता , फिर वह चाहे हिन्दू व मुस्लिम साम्प्रदायिकता ही क्यों न हो। यह भारतीय राष्ट्रत्व और के विरूद्ध एक भारी चुनौती है। साम्पदायिकता ने सदैव हमारे राष्ट्रीय जीवन में एक प्रतिक्रियावादी और फूटवादी भूमिका अदा की है।

## साम्प्रदायिकता के कारणों की खोज

यद्यपि सरकार के गृहविभाग की रिपोर्ट को देखा जाए तो पता चलता है कि साम्प्रदायिकता तनाव या उपद्रव, गाय के वध के कारण, मस्जिद के सामने संगीत से , होली के समय मुसलमानों पर रंग डालने आदि से शुरू होती है जो कि इसके एंतिहासिक कारण हैं। गोयल ने अहमदाबाद में 1969 में जगन्नाथ मन्दिर के अपमान को लेकर हुयी हिंसा के कारणों का विश्लेषण किया । इन विभिन्न कारणों से साम्प्रदायिकता बढ़ जाती है। जो इस प्रकार हैं।

**धार्मिक संकीर्णता–** भारत में साम्प्रदायिकता के विकास का एक कारण बल पूर्वक धर्म प्रचार कहा जा सकता है। मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना के बाद कुछ मुसलमान शासकों ने हिन्दुओं को बलात् मुसलमान बनाना शुरू किया इससे हिन्दुओं में घृणा तथा नफरत फैली।

**अपने धर्म के प्रति श्रेष्ठता एवं सम्मान की भावना**– इसका दूसरा कारण यह है कि प्रत्येक सम्प्रदाय का व्यक्ति अपने धार्मिक विश्वासों से इतना जकड़ चुका है कि उसमें धार्मिक सहिष्णुता कदापि नही बची है।

**दोषपूर्ण नेतृत्व–** वर्तमान में राजनीतिक नेता नेतृत्व के लिए धर्म का सहारा लेते हैं और दंगो का नेतृत्व करते हैं।

**उग्रवादी विचार धारा–** भारत में साम्प्रदायिक तनाव के लिए उग्रवादी विचार धारा तथा इसमें विश्वास रखने वाले उग्रवादी नेताओं की भूमिका से भी इन्कार नही किया ज सकता। गुजरात दंगे इसका ताजा उदाहरण हैं

**मनोवैज्ञानिक कारण–** प्रायः अल्पसंख्यको और पिछड़ो में यह भावना होती है कि बहुसंख्यक उन्हे सताते है तथा उन्हे दबाने का प्रयास करते है इससे वह असुरक्षित महसूस करते हैं।

यह एक विशेषाधिकार युक्त अस्त्र है जिसमे राजनीति एवं धर्म के अपवित्र गठबंधन के आधार पर शक्ति हासिल की जाती है वस्तुतः यह नृजातीयता अस्मिता एवं आधुनिक हितों का एक विलक्षण संयोजन है। साम्प्रदायिकता, धर्म निरपेक्ष एवं प्रजातंत्र के आधार पर राष्ट्रीय एकीकरण एवं राजनीविक व्यवस्था की विरोधी प्रक्रिया है। गोलवलकर ने कहा कि

''हिन्दुस्तान में गैर हिन्दुओं को हिन्दू संस्कृति एवं भाषा को अपनाना होगा, हिन्दू प्रजाति एवं संस्कृति को गौरव प्रदान करने वाले विचारो को महत्व देना होगा,. उन्हें विदेशी के प्रतिनिधि बनकर रहने की इजाजत नही बल्कि हिन्दू राष्ट्र के पूर्व अधीन रहना होगा, कोई नागरिक अधिकारो की भी मांग नही करनी होगी।'' इस प्रकार साम्प्रदायिकता के अन्तर्गत भारतीय संविधान के मूल आदर्श''धर्म,जाति वंशनाम के आधार पर भेदभाव न करने पर ही प्रहार किया जाता है। यह किसी विशिष्ट स्थान अथवा क्षेत्र तक सीमित नही बल्कि आसाम से गुजरात तथा कश्मीर से केरल तक साम्प्रदायिक रोग व्याप्त है।

भारत में साम्प्रदायिकता का श्रोत राजनीतिक है।जिसे स्वातन्त्रता पूर्व की अवधियो में देखा जा सकता । हसन1981 व दीक्षित1969 ने यह निष्कर्ष दिया कि भारत के मुसलमान में धार्मिक प्रतीकों – मस्जिद ,हाजी , सूफी समाधि स्थल, आदि ने मातृत्व का भाव पैदा किया। स्मिथ तथा अहमद के अनुसार हिन्दू मुसलमान विवाद का प्रमुख कारण यह था कि स्वाधीनता संग्राम आन्दोलन में हिन्दू समुदाय द्वारा अपने धर्म के प्रतीको एवं मुहावरो को अपनाया गया । धर्म निरपेक्ष प्रतीको को अपनाये जाने की असफलता ने हिन्दू मुस्लिम विवाद उत्पन्न किया ।ब्रिटिश शासन की ''बांटो और राज करो '' की नीति ने यही भावना को और तीव्र किया । विभिन्न राजनीतिक दलो ने राजनीतिक लाभ के लिए साम्प्रदायिकता को प्रेातसाहित किया है यह आरोप लगाया गया कि '' काग्रेस पार्टी साम्प्रदायिकता की मां है'' तथा चार

दशक से अधिक अवधि तक सत्ता में रहने के बावजूद साम्प्रदायिकता सौहार्द्र कायम करने में असफल रही है।

## साम्प्रदायिकता को दूर करने के उपाय

**राष्ट्रीय इतिहास का निर्माण और प्रचार –** भारत में साम्प्रदायिक तनाव दूर करने के लिए यह आवश्यक है कि ऐसे इतिहास का निर्माण किया जाय जिसमें देश की स्वतन्त्रता के लिए हिन्दुओं और मुसलमानें द्वारा किये गये बलिदानों को उल्लेख हो।

**समाज सेवी दलों का गठन** – इन समस्याओ को दूर करने के लिए ऐसे समाज सेवी दलों का गठन किया जाय जो गांव गांव घूम कर लोंगो कों यह शिक्षा दें की साम्प्रदायिकता राष्ट्र के लिए अत्यन्त घातक है।

**असाम्प्रदायिक संस्थाओं का निर्माण–** भारत में अनेक ऐंसी संस्थायें बनायी जायें जो पूर्ण रूप से असाम्प्रदायिक हो और वहां हिन्दू और मुसलमान दोनो ही आपस में एक दूसरे से मिलने और एक साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त हो ।

**साम्दायिक दलों पर रोक**– भारत में मुस्लिम लोग और हिन्दू महासभा आदि अनेक ऐसे दल हैं एक दूसरे के विरूद्ध आग उगला करते है आवश्यकता इस बात की है कि इन राजनैतिक दलों पर अविलम्भ ही रोक लगा दी जाय ।

**असाम्प्रदायिक जनमत का निर्माण –** पत्र पत्रिकाओं , चल–चित्रो,

भाषणों , रेडियों कार्यक्रमों के द्वारा असाम्प्रदायिक जनमत का निर्माण किया जाना चाहिए । जो पत्र पत्रिकायें किसी विशेष सम्प्रदाय के विरूद्ध घृणा की भावना फैलाती हैं उन्हें तुरन्त बंद कर देना चाहिऐं ।

**राष्ट्रीय पर्वो को प्रोतसाहन और सर्व धर्म सम्मेलन**– भारत में हिन्दू और मुसलमान दोनो ही अपने अपने त्योहारों अलग–अलग मानते हैं अकबर के शासन में प्रमुख त्योहारों को एक साथ मनाने का प्रयास किया गया था।

**अल्पसंख्यक के नाम पर विशेष सुविधाओं का अन्त**– आज हम देखते हैं कि हमारी सरकार अल्प संख्यको के नाम पर मुसलमानों को विशेष सुविधायें देती है। इसका मुख्य कारण चुनाव में मुस्लिम वोंट पाना है।

**साम्प्रदायिक शिक्षण संस्थाओं पर रोक** – हमारे देश में अनेक ऐसी शिक्षण व सामाजिक, राजनीतिक संस्थाएं है जिनके नाम से ही साम्प्रदायिकता झलकती है। सरकार को चाहिए की वह ऐसी किसी भी संस्था का पंजीयन न करे। जो साम्प्रदायिक भावनाओं से ओत–प्रोत हों।

**धार्मिक सहिष्णुता की शिक्षा–** शिक्षा के अन्तर्गत सभी धर्मो के महान व्यक्तियों की जीवनी और उनके उपदेशों को शामिल करना चाहिए। इनसे सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि विद्यार्थियों को हर धर्म की अच्छाइयों का ज्ञान होगा,उनके बीच धर्म एक दीवार के रूप में नही होगा। प्रायः देखा गया है कि धार्मिक सहिष्णुता और अनुदारता कारण ही समस्या उत्पन्न होती है। सभी धर्मो की समान शिक्षा पाने पर विद्यार्थी हर धर्म का आदर करेगा।

साम्प्रदायिकता की समस्या को हल करने के उद्देश्य से केन्द्रीय स्तर पर राष्ट्रीय एकता परिषद का गठन किया गया 16 अक्टूबर 1969 को दिल्ली में हुयी । इसकी बैठक में यह तय किया गया कि जन साधरण में सांम्प्रदायिक सद्भावना जाग्रत करने के लिए विचार विमर्श तथा शिक्षा के व्यापक कार्यक्रम अपनाने चाहिए। इस बैठक में इस बात पर भी जोर दिया गया कि देश की प्रशासनिक इकाइयों को साम्प्रदायिक दंगों को समाप्त करने हेतु कठोर कदम उठाने चाहिए। इस अवसर पर इस ओर भी ध्यान दिया गया कि अल्पसंख्यक समूहों की समस्याओं के निराकरण पर विशेष ध्यान दिया जाय। विचारकों का मानना है कि भारत में अल्पसंख्यक की समस्याओं के कारण साम्प्रदायिकता की समस्या का विकास होता है यदि बहुसंख्यक लोग इन अल्पसंख्यको को सहयोग प्रदान करे तो यह समस्या हल हो सकती है।

लेख में समाज वैज्ञानिकों द्वारा अनुसंधान कार्य किये जाने पर भी जोर दिया गया।

## निष्कर्ष

साम्प्रदायिक समस्या से छुटकारा पाने के लिये यह नितान्त आवश्यक है कि व्यक्ति के जीवन को इस तरह से संस्कारित किया जाय कि उनमें प्रखर राष्ट्रीयता जाग्रत हो, देश भक्ति के भाव उत्पन्न हो और वे संकीर्ण स्वार्थो सें ऊपर उठें । यह सब कुछ उसी समय सम्भव है जब व्यक्तियों का समाजीकरण प्रारम्भ से ही इस प्रकार से हो कि वे अपने आपको भारत देश का योग्य नागरिक बना सके।

## सन्दर्भ सूची


- भारत का समाजशास्त्र –प्रो0 जयकान्त तिवारी
- समाजिक समस्यायें – डॉ0 राम आहूजा
- भारतीय समाजिक समस्यायें –डॉ0 आर के शर्मा एवं डॉ0 के0 के0 श्रीवास्तव
- समाचार पत्र एवं पत्रिकायें